प्रकाशन की तिथि 01.9.2015

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

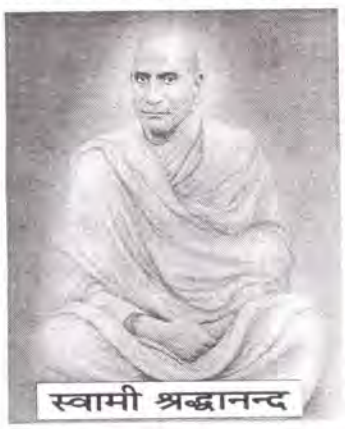

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 38 अंक 09

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

सितम्बर 2015 विक्रम सम्वत् 2072 भाद्रपद -आश्विन

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

सर्वपल्ली डा. राधाकृष्णन का जन्मदिवस 5 सितम्बर के अवसर पर विशेष लेख

समाज के वास्तविक शिल्पकार होते हैं शिक्षक!

- डा0 जगदीश गांधी, शिक्षाविद् एवं संस्थापक-प्रबन्धक
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

(1) शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली :-

5 सितम्बर को एक बार फिर सारा देश भारत के पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डा. राधाकृष्णन का जन्मदिवस 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाने जा रहा है। महर्षि अरविंद ने शिक्षकों के सम्बन्ध में कहा है कि "शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से सींचकर उन्हें शक्ति में निर्मित करते हैं।" महर्षि अरविंद का मानना था कि किसी राष्ट्र के वास्तविक निर्माता उस देश के शिक्षक होते हैं। इस प्रकार एक विकसित, समृद्ध और खुशहाल देश व विश्व के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका ही सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। आज कोई भी बालक 2-3 वर्ष की अवस्था में विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आता है। इस बचपन की अवस्था में बालक का मन-मस्तिष्क एक कोरे कागज के समान होता है। इस कोरे कागज रूपी मन-मस्तिष्क में विद्यालयों के शिक्षकों के द्वारा शिक्षा के माध्यम से शुरूआत के 5-6 वर्षों में दिये गये संस्कार एवं गुण उनके सम्पूर्ण जीवन को सुन्दर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

(2) समाज के वास्तविक शिल्पकार होते हैं शिक्षक :-

एक अच्छा शिल्पकार किसी भी प्रकार के पत्थर को तराश कर उसे सुन्दर आकृति का रूप दे देता है। किसी भी सुन्दर मूर्ति को तराशने में शिल्पकार की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इसी प्रकार एक अच्छा कुम्हार वही होता है जो गीली मिट्टी को सही आकार प्रदान कर उसे समाज के लिए उपयोगी बर्तन अथवा एक सुन्दर मूर्ति का रूप दे देता है। यदि शिल्पकार तथा कुम्हार द्वारा तैयार की गयी मूर्ति एवं बर्तन सुन्दर नहीं है तो वह जिस स्थान पर रखे जायेंगे उस स्थान को और अधिक विकृत स्वरूप ही प्रदान करेंगे। शिल्पकार एवं कुम्हार की भाँति ही स्कूलों एवं उसके शिक्षकों का यह प्रथम दायित्व एवं कर्त्तव्य है कि वह अपने यहाँ अध्ययनरत् सभी बच्चों को इस प्रकार से संवारे और सजाये कि उनके द्वारा शिक्षित किये गये सभी बच्चे 'विश्व का प्रकाश' बनकर सारे विश्व को अपनी रोशनी से प्रकाशित कर सकें। इस प्रकार शिक्षक उस शिल्पकार या कुम्हार की भाँति होता है जो प्रत्येक बालक को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप, एक सुन्दर आकृति का रूप प्रदान कर, उसे 'समाज का प्रकाश' अथवा उसे विकृत रूप प्रदान कर 'समाज का अंधकार' बना सकता है।

(3) बालक के जीवन को सफल बनाने की आधारशिला हमें बचपन में ही रखनी चाहिए :-

एक कुशल इंजीनियर वहीं होता है जो एक भव्य इमारत या भवन के निर्माण में उसकी नींव को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हुए उसे मजबूत बनाता है। और जब किसी भवन की नींव मजबूत हो तो फिर आप उसके ऊपर बनाये जाने वाले भवन को जितना चाहें उतना ऊँचा बना सकते हैं। और इस प्रकार से बनी हुई इमारत अन्य भवनों एवं इमारतों की अपेक्षा अधिक समय तक अपने अस्तित्व को बनाये रखने में सफल होती है। ठीक इसी प्रकार से हमें बच्चों के बारे में भी सोचना चाहिए क्योंकि आज के बच्चे ही कल अपने परिवार, समाज, देश तथा विश्व के भविष्य निर्माता बनेंगे। इसलिए हमें प्रत्येक बच्चे की नींव को मजबूत करने के लिए बचपन से ही उसे उसकी वास्तविकताओं के आधार पर भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की उद्देश्यपूर्ण एवं संतुलित शिक्षा देनी चाहिए।

(4) उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के माध्यम से ही एक सुन्दर एवं सभ्य समाज का निर्माण संभव :-

हमें प्रत्येक बच्चे को सभी विषयों की सर्वोत्तम शिक्षा देकर उन्हें एक अच्छा डॉक्टर, इंजीनियर, न्यायिक एवं प्रशासनिक अधिकारी बनाने के साथ ही उसे एक अच्छा इंसान भी बनाना है। क्योंकि सामाजिक ज्ञान के अभाव में जहाँ एक ओर बच्चा समाज को सही दिशा देने में असमर्थ रहता है तो वहीं दूसरी ओर आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में वह गलत निर्णय लेकर अपने साथ ही अपने परिवार, समाज, देश तथा विश्व को भी विनाश की ओर ले जाने का कारण भी बन जाता है। इसलिए प्रत्येक बच्चे को सर्वोत्तम भौतिक शिक्षा के साथ ही साथ उसे एक सभ्य समाज में रहने के लिए सर्वोत्तम सामाजिक शिक्षा तथा एक सुन्दर एवं सुरक्षित समाज के निर्माण के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने के लिए सर्वोत्तम आध्यात्मिक शिक्षा की भी आवश्यकता होती है।

(5) प्रत्येक बालक को विश्व का प्रकाश बनायें :-

शिक्षक एक सुन्दर, सुसभ्य एवं शांतिपूर्ण राष्ट्र व विश्व के निर्माता हैं। शिक्षकों को संसार के सारे बच्चों को एक सुन्दर एवं सुरक्षित भविष्य देने के लिए व सारे विश्व में एकता एवं शांति की स्थापना के लिए बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51' के विचार रूपी बीज बचपन से ही बोने चाहिए। हमारा मानना है कि भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51' रूपी बीज बोने के बाद उसे स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण व जलवायु प्रदान कर हम प्रत्येक बालक को विश्व नागरिक के रूप में तैयार कर सकते हैं।

(6) समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करती है उद्देश्यपूर्ण शिक्षा :-

डॉ. राधाकृष्णन अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्याओं, आनंदमयी अभिव्यक्ति और हँसाने, गुदगुदाने वाली कहानियों से अपने छात्रों को प्रेरित करने के साथ ही साथ उन्हें अच्छा मार्गदर्शन भी दिया करते थे। ये छात्रों को लगातार प्रेरित करते थे कि वे उच्च नैतिक मूल्यों को अपने आचरण में उतारें। वे जिस विषय को पढ़ाते थे, पढ़ाने के पहले स्वयं उसका अच्छा अध्ययन करते थे। दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी वे अपनी शैली की नवीनता से सरल और रोचक बना देते थे। उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाए तो समाज की अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है। उनका मानना था कि करूणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं। वे कहते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी व उद्देश्यपूर्ण शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती।

(7) शिक्षकों के श्रेष्ठ मार्गदर्शन द्वारा ही धरती पर ईश्वरीय सभ्यता की स्थापना संभव :-

भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक गुणों से ओतप्रोत शिक्षकों के द्वारा ही समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करके एक सुन्दर, सभ्य एवं सुसंस्कारित समाज का निर्माण किया जा सकता है। सर्वपल्ली डा0 राधाकृष्णन भी ऐसे ही महान शिक्षक थे जिन्होंने अपने मन, वचन और कर्म के द्वारा सारे समाज को बदलने की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत की। वास्तव में ऐसे ही श्रेष्ठ शिक्षकों के मार्गदर्शन द्वारा इस धरती पर ईश्वरीय सभ्यता की स्थापना होगी। अतः आइये, शिक्षक दिवस के अवसर पर हम सभी डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को शत्-शत् नमन करते हुए उनकी शिक्षाओं, उनके आदर्शों एवं जीवन-मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात् करके एक सुन्दर, सभ्य, सुसंस्कारित एवं शांतिपूर्ण समाज के निर्माण के लिए प्रत्येक बालक को टोटल क्वालिटी पर्सन (टी.क्यू.पी.) बनायें।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वेद कथा का श्रवण

– डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

आषाढ़ के पश्चात श्रावण माह आता है इसका प्राचीन काल से ही अत्यधिक महत्व है श्रावणी का भाव ही श्रवण करना है अर्थात् वेद कथा सुनना जिसमें वेद क्या हैं वेद में क्या ऐसा है जो प्रत्येक को सुनना चाहिए मंत्रों के अर्थ व उनकी व्याख्या सुननी व सुनानी चाहिए प्राचीन काल से इस माह का महत्व रहा है अब भी आर्य विद्वान वेद प्रचार शिविर जलसों व विभिन्न कार्यक्रमों तथा आयोजनों में आर्य समाजों में वेद ज्ञान का प्रचार करते हैं श्रावण (सावन) के माह में ही इस प्रचार का महत्व क्यों है यह भी विचारणीय विषय है।

सावन मास ऐसा समय है जिसमें वर्षा की बूँदों से शीतलता मिलती रहती हे ग्रीष्म अर्थात् ज्येष्ठ व आषाढ़ की ग्रीष्म से जो तपन होती है सावन में वर्षा से कम हो जाती है।

वेद मंत्र है जिसे आचमन के समय उच्चारण करते हैं "ओ३म् शन्नो देवीरभिष्ट्य आपो भवन्तु पीतये" अर्थात् जब हम आचमन करते हैं तब वह जल हमारे ओष्ठ मुख गले द्वारा होता हुआ हृदय तक जाता है तथा शान्ति दायक होता है उसी प्रकार जैसे कि वर्षाऋतु की छोटी छोटी बूँदे हमारे शरीर को ठण्डक अर्थात् शीतलता पहुँचाती हैं वैसे ही वेद मन्त्रों से हमारे मन मष्तिष्क व हृदय को ज्ञान से तृप्ति मिलती है।

श्रावण मास में कृषक मजदूर आदि के पास समय होता है जिससे वेद कथा का श्रवण निश्चिन्त होकर किया जा सकता है। चारों ओर हरियाली होती है कृषि फसल हरी भरी होती हैं जिन्हें देख मन प्रसन्न रहता है। प्राचीन काल में नदियों के पास ऋषियों के आश्रम होते थे जहां गुरुकुल भी होते थे बालक व बालिकाएँ अलग अलग पाठशालाओं में पढ़ते थे वेद का ज्ञान उन्हें दिया जाता था श्रावण मास में यह साधु व विद्वान वहां आने वाले भक्तों को वेद ज्ञान देते थे तथा यह साधु ग्राम, नगर महानगर आदि स्थानों पर जा कर भी वेद कथा का उपदेश किया करते थे घरों, चौपालों, धर्मशालाओं, वाटिकाओं में महिला व पुरुषों को एकत्र कर वेद मंत्रों का श्रवण कराते थे।

अनेक परिवार व स्त्री पुरुष उनके जीवन में संस्कार आदि की कोई कमी होती थी उनका शंका समाधान किया करते थे और परिवार समाज राज्य व्यवस्था अथवा कोई भी संकट होता था उसका विद्वानों द्वारा समाधान निकाल लिया करते थे।

श्रावण मास आहलादकारी होता है मन हर्षित रहता है न अधिक गर्मी न अधिक सर्दी होती है वर्षा की छोटी, छोटी बूँदों से मन तृप्त रहता है संतप्त रहता है शीतलता मिलती रहती है ऐसे में आर्य विद्वानों द्वारा वेद चर्चा से ज्ञान क्षुधा भी शान्त होती है ज्ञान प्राप्त होता है अतः श्रावण का माह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

आज भी आर्य समाजों में विशेषत श्रावण मास में स्थान स्थान पर श्रावणी पर्व मनाया जाता है जहां वेद कथा की चर्चा होती है स्त्री पुरुष व बालक इस पावन वेद प्रचार में आते हैं और वेद कथा का श्रवण करते हैं।

विडम्बना यह है कि आर्य समाज तो विषय का सत्य रूप में निरूपण कर रहा है कि श्रावण मास का क्या महत्व है परन्तु जो वेद को नहीं जानते आर्य समाज से दूर हैं वह इसको जनता के सामने उल्टे रूप में परोसते हैं वह नहीं जानते कि यह माह पवित्र विचारों का उपदेश करने का है वेद प्रचार करने का है उन्होंने इस अश्लीलता व मदमस्ती से जोड़ दिया सावन का महीना पावन करे शोर जियरर झूमें ऐसे जैसे बनमा नाचे मोर "सावन के झूले पड़े तुम चले आओ" ऐसे गाने जिनमें मादकता के दर्शन होते हैं हो सकता है फिल्मकारों को वेद के विषय में उचित मार्ग दर्शन न मिला हो। पौराणिक लोग भी इस विषय से दूर हैं वह कांवड़ लेकर गंगा की ओर भागने लगते हैं और जल लाकर शिवलिगों पर चढ़ाने लगते हैं।

हमारा समाज इस क्षेत्र में दिग्भ्रमित हुआ है जो सत्य था उससे हट कर चलने लगे पहले गंगा गोदावरी सरयू आदि नदियाँ पर आश्रमों में वेद कथा श्रवण हेतु टोलियों में गाते बजाते जाया करते थे वेद कथा सुनते थे अब वेद कथा श्रवण तो बन्द हो गए परन्तु नदियों में स्नान चलता रहा मेले लगते रहे जिनमें कुम्भ भी एक बड़ा मेला है इन मेलों का महत्व प्रायः समाप्त हो चुका है स्नान से शरीर का मैल तो धुल सकता है परन्तु मन का मैल नहीं धुल सकता अतः पुनः प्रयास होने चाहिए कि इन मेलों गंगा आदि स्नानों को वेद प्रचार वेद कथा श्रवण से जोड़ा जाय जिससे वेद की गंगा वह कर प्रत्येक परिवार व व्यक्तियों के हृदयों तक पहुँचे वेद ज्ञान ही आत्मा का भोजन है हमें सदैव वेद श्रवण कर अपना जीवन पवित्र बनाना चाहिए विशेषतः श्रवण माह में वेद का जितना भी हो सके जोर शोर से प्रचार होना चाहिए।

वेद मनुष्य के लिए हैं संसार के लिए हैं वेद से ही संसार का भला होगा यह किसी वर्ग, विशेष भूगोल या सीमा से नहीं बंधा है न ही इसमें किसी का इतिहास है। जैसा कि ईश्वर है, दयालु, कृपालु, पक्षपाल रहित, न्यायकारी, सबका नियन्ता परोपकारी, वैसा ही ज्ञान वेद में है विश्व भर में यदि शुद्ध पवित्र पक्षपात रहित और समस्त मानव जाति के लिए ज्ञान है तो वह वेद ही है आर्यों का धर्म वेद का प्रचार करना है जिससे समस्त मानव जाति को इसकी श्रेष्ठता का ज्ञान हो और सभी श्रेष्ठ बनें दुनियां में शान्ति स्थापित हो।

–चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा
मो. 8979794715

अच्छा लगता है :–

ध्वज हवा में लहराता, अच्छा लगता है।
सैनापति विजय पाकर आता, अच्छा लगता है।
हाथी सूंड उठाता, घोडा हिनहिनाता, अच्छा लगता है।
तारा टमटमाता, इन्द्र धनुष आकाश सजाता, अच्छा लगता है।
कृष्ण मखन खाते अच्छा लगता है।

तोता मालिक की हाँ में हाँ मिलाता, अच्छा लगता है।
मोर नृत्य दिखाता, खेत लहलहाता, अच्छा लगता है।
रेंगता बच्चा मुस्कराता हुआ, अच्छा लगता है।
नट करतब दिखाता, अच्छा लगता है।

आमों से झूलता पेड़, अच्छा लगता है।
फूलों का सुगंध फैलाना, अच्छा लगता है।
सब को पिकनिक में जाना, अच्छा लगता है।
नव में 24 घंटे पानी आना, अच्छा लगता है।
डाक्टर रोगी को बचाते, अच्छा लगता है।

बेटी भजन गाते अच्छी लगती है।
छेड़ने वाले को जूता लगती अच्छी लगती है।
वह थोड़ा शरमाती खाना बनाती, अच्छी लगती है।
लता 'मेरे वतन के लोगो' का गीत गाते, अच्छी लगती है।

गवाले को भरपूर दुध देती गाय अच्छी लगती है।
किसान को धीर धीरे बरसात, अच्छी लगती है।
बहुत सर्दी में धूप, अच्छी लगती है।
व्यायाम से भूख, अच्छी लगती है।

क्रिकेट का खिलाडी छका लगाता, अच्छा लगता है।
शिष्य गुरु के चरण स्पर्श करते, अच्छा लगता है।
सब को शत्रु भगाना, मित्र का आना, अच्छा लगता है।
कलाकार को कला दिखाना, अच्छा लगता है।

ब्रह्मचारी वेद मंत्र गाता , अच्छा लगता है।
गृस्थी दान देता दिलाता, अच्छा लगता है।
सन्यासी देश भ्रमण जाता, अच्छा लगता है।
विश्व योग क्रिया अपनाता, अच्छा लगता है।

मुसलमान शाकाहारी बन जाता, गीता अपनाता अच्छा लगता है।
ईसाई वैदिक धर्म में वापस आता, अच्छा लगता है।
सिक्ख सब को लंगर खिलाता, अच्छा लगता है।
सनातनी–गाय को कसाई से बचाता, अच्छा लगता है।
आर्य समाजी अन्ध विश्वास हटाता, अच्छा लगता है।

गुरु नानक का मक्के में जाना ठीक था ।
विवेकानन्द का शिकागों में भाईयो बहनों कहना ठीक था।
महर्षि दयानन्द का पाखण्डनी पताका लहराना, ठीक था।
स्वामी श्रद्धानन्द का शुद्धि चक्र चलाना, ठीक था।

–हरबंस लाल कोहली

गर्भाधान संस्कार का महत्त्व

परिभाषा– **"गर्भस्याऽऽधानं वीर्य-स्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्"** अर्थात् गर्भ का धारण वीर्य का स्थापन गर्भाशय में स्थिर करना जिस प्रक्रिया से होता है उसको गर्भाधान संस्कार कहते हैं। गर्भाधान संस्कार का उद्देश्य मानव के नवनिर्माण से है।

इस संस्कार में माता-पिता अपने शरीर व मन को शुद्ध पवित्र बनाकर एक दिव्य आत्मा का आह्वान करते हैं। परम पिता परमेश्वर की अनुकम्पा और पति-पत्नी के सत्प्रयासों से, एक दिव्य जीवन माँ के गर्भ में प्रविष्ट होकर 9 महीने माँ के उदर में विकास करता है, भोजन व संवेदन माँ से ही ग्रहण करता है। इसलिए ऐसे समय में माँ को विशेष रूप से सावधान रहने की आवश्यकता है। बच्चे का जन्म देना एक बहुत बड़ा तप है, साधना है, जीवन का सर्वश्रेष्ठ कार्य है और सर्वोत्तम परोपकार है।

गर्भाधान संस्कार कुल की वृद्धि और इस सृष्टि की निरन्तरता के लिए होता है। इसका माध्यम माता-पिता होते हैं। माता-पिता की सोच, परम्परा, प्रवृत्तियों आदि का प्रभाव उनकी सन्तान पर सशक्त रूप से पड़ता है। यही कारण है कि बुरी प्रवृत्ति वाले माता-पिता की सन्तान भी उन्हीं के अनुरूप होती है जबकि अच्छे स्वभाव व गुणों वाले माता-पिता की सन्तान भी उन्हीं के गुणों से युक्त होती है। आदतों के कारण माता-पिता की सन्तान भी उनका नाम रोशन करने का कारण बनती है। इसीलिये कहा जाता है कि जैसे माता-पिता होंगे वैसे ही उनकी सन्तान होगी। शास्त्रकारों का ऐसा मानना है कि संस्कार प्रक्रिया के द्वारा वंशागत, पैतृक और माता-पिता के रज वीर्य के प्रभावों को बदला भी जा सकता है। ऐसे उदाहरण भी अनेक देखने को मिलते हैं कि बुरे स्वभाव वाले माता-पिता के बच्चे भी अच्छे निकल जाते हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी इसे विज्ञान का आधार देते हुए कहा है कि मानव स्वभाव का कारण जीन्स होते हैं तो वंशानुगत परम्परा से आते हैं। इन्हें बदलने के लिए मानव में नए प्रकार के जीन्स का प्रवेश कराना पड़ेगा। एक प्रकार के जीन्स से एक ही परिर्वतन होता है। यदि अनेक परिवर्तन लाने हैं तो हमें अनेक जीन्स का प्रवेश उसमें कराना होगा। इस प्रकार के जीन्स की खोज करने में आधुनिक विज्ञान ने सफलता भी पाई है।

भारतीय परम्परा में कहा जाता है कि बच्चों को अच्छे संस्कार देकर अच्छा बनाने का मार्ग खोलो। जीवन विज्ञानी भी आजकल ऐसी मानव निर्माण कला की खोज में लगे हैं जिसके आधार पर उच्च कोटि के मानव का निर्माण हो सके और हम स्वेच्छा से कवि, चित्रकार, विद्वान आदि जैसे मानव की आवश्यकता समझें, वैसा ही मानव उत्पन्न कर सकें।

संस्कारों से मानव के वंशानुगत प्राप्त परम्पराओं को बदल कर उसे जैसा चाहे बनाया जा सकता है। इसको हम टार्जन के उदाहरण से भी स्पष्ट कर सकते हैं, जो था तो मानव पुत्र किन्तु किसी कारण से वह जंगली पशुओं की भांति ही रहने, खाने, पीने व विचरण करने लगा। यदि माता-पिता का रज व वीर्य ही सब कुछ होते तो वह कभी भी मानवीय आदतों को न छोड़ पाता किन्तु यहाँ तो संस्कार प्रभावी दिखाई देते हैं। जिनके कारण वह मनुष्य रूपी कोई भी कार्य न कर सकता था। बस यही संस्कारों का परिणाम है। अतः भारतीय ऋषियों ने मानव नव निर्माण का स्वप्न संस्कारों के माध्यम से लिया। बच्चे की परिस्थितियों को बदलने से ही उसे उन्नत बनाया जा सकता है। अतः गर्भाधान संस्कार एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके प्रयोग से हम मन चाही सन्तान पैदा करने में सक्षम हो सकते हैं। वृहदारण्यकउपनिषद् ने भी गर्भाधान संस्कार पर बहुत बल दिया है। संस्कार व्यक्ति के निर्माण की क्षमता रखते हैं।

गर्भाधान संस्कार का मनुष्य के विवाह से विशेष सम्बन्ध है। यह विवाह ही है जो भावी पीढ़ी के जन्म का कारण बनता है। यदि हमारी सामाजिक परम्पराओं में विवाह नामक संस्था न होती तो हमारी दशा भी पशुओं जैसी होती। इसीलिये भारतीय ऋषियों ने गर्भाधान संस्कार से पूर्व विवाह को आवश्यक माना है।

गर्भाधान संस्कार इस संसार में नई आत्मा के प्रवेश का एक मात्र मार्ग है। मानव के नव निर्माण के लिए भारतीय ऋषियों ने सर्वप्रथम इसी संस्कार पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। बलिष्ठ शरीर व उत्तम आत्माओं को बुलाने के लिए गृहस्थ की इस क्रिया की ओर हमारे ऋषियों ने एक अत्यन्त पवित्र कार्य माना है क्योंकि पवित्र कार्य होने पर ही उत्तम आत्माओं का इस संसार में आगमन होता है। नारी जन्मदात्री माँ होती है। वह शिशु की प्रथम शिक्षिका भी है। वीर, साहसी, पवित्र एवं सर्वथा उन्नतिशील सन्तान का सृजन हो, इसके लिए प्रत्येक नारी के व्यावहारिक जीवन में अन्तर्बाह्य पवित्रता बनाये रखने के लिये संस्कारों का बहुत बड़ा योगदान है।

स्वस्थ शरीर व स्वस्थ मन का गर्भाधान पर विशेष प्रभाव होता है। तभी तो चरक जैसे आयुर्वेदाचार्य ने कहा है कि जैसी सन्तान की आवश्यकता हो स्त्री गर्भकाल में वैसे विचार, वातावरण, व्यवहार व कथाप्रसंग में रत रहे। दम्पति जैसी सन्तान चाहते हैं गर्भवती स्त्री अपने आप को वैसे ही वातावरण में रखे। शूरवीर बनाने के लिए वीरों की कथाएँ करें, सुनें, वीरों के ही चित्र देखें तथा हर समय वीरों के जीवनों का ही चिन्तन करें, घर में उन्हीं के चित्र लगे हों।

यदि गर्भाधान संस्कार को पूर्ण वैदिक रीति से किया जाये तथा जैसी सन्तान की कामना हो स्त्री अपने आपको उसी वातावरण में रखे। पति पत्नी में उन्हीं विषयों पर ही चर्चा हो। परिवार में किसी प्रकार का कोई क्लेश न हो तो निश्चित ही कामधेनू के समान इच्छित सन्तान पैदा होगी। जिस से संसार की सुख समृद्धि तो होगी ही, परिवार, माता-पिता व स्थान का नाम भी सर्वत्र गौरव के साथ लिया जायेगा।

–साभार – संस्कारम्

पाप के अन्न का दुष्परिणाम

पूज्य महात्मा हंसराज जी एक बार हरिद्वार के मोहन आश्रम में ठहरे हुए थे। एक वानप्रस्थी उनके पास ही एक कमरे में रहता था। एक दिन वानप्रस्थी सीधा महात्माजी के पास आया और जोर-जोर से रोने लगा। महात्माजी ने पूछा-"क्या हुआ आपको?"

वह बोला-"मैं लुट गया, महात्माजी! मेरी उम्र-भर की कमाई नष्ट हो गई।

महात्माजी बहुत घबराये। पूछने पर पता लगा कि वह वानप्रस्थी पिछले कई वर्षों से ईश्वर-भक्ति के मार्ग पर चलता हुआ ध्यान और उपासना की सीढ़ी तक पहुँच चुका था। रात्रि के समय अपने कमरे में बैठ जाता वह। भगवान् का ध्यान करता, ईश्वर की शीतल ज्योति उसे दिखाई देती। उसमें आनन्द से मस्त होकर वह घंटो बैठा रहता। परन्तु कल रात उसके साथ एक अद्भुत घटना घटी। रोते हुए उसने कहा-"मैं ध्यान में बैठा महात्माजी तो ऐसा प्रतीत हुआ कि रोशनी में लाल दुपट्टे वाली एक नौजवान लड़की खड़ी है। मैंने घबराकर आंखें खोल दी। समझा, कुछ भूल हो गई है। फिर प्राणायाम किया, फिर ध्यान से ज्योति को देखा, परन्तु वह लड़की अब भी वहीं थी। मैं उसे जानता नहीं, परन्तु बार-बार मेरे सामने आकर खड़ी हो जाती है। मैंने बार-बार मुँह-हाथ धोकर प्राणायाम करने का प्रयत्न किया है। बार-बार उसे हटाने का प्रयत्न किया है, परन्तु रोशनी में उसके अतिरिक्त कुछ मुझे दिखाई नहीं देता। मेरी तो उम्र-भर की कमाई लुट गई। मैं तो कहीं का न रहा। पता नहीं मुझे क्या हो गया?" वह कहता जाता था और रोता जाता था।

महात्मा ने पूछा-"किसी बुरे व्यक्ति की संगत में तो नहीं बैठे?कोई बुरी पुस्तक तो नहीं पढ़ी?" उसने कहा- "ऐसा कुछ नहीं किया मैंने।" महात्माजी ने कहा- "कल तुम आश्रम से बाहर तो गए होगे?"

वह बोला- "गया था, एक भण्डारे में। एक सेठ साहब आये हैं। उन्होंने भण्डारा किया था, वहां खाना खाने गया था।"

महात्माजी ने कहा- "जाकर पता लगाओ-वह सेठ कौन है और उसने भण्डारा किया था, वहां खाना खाने गया था।"

महात्माजी ने कहा- "जाकर पता लगाओ-वह सेठ कौन है और उसने भण्डारा क्यों किया था?"

वानप्रस्थी गया। पता लगाकर उसने बताया कि सेठ एक शहर का रहने वाला है। वहाँ उसने अपनी नौजवान बेटी को एक बूढ़े के पास दस हजार रूपये में बेच दिया था। दो हजार रूपया लेकर वह हरिद्वार आया है कि पाप का प्रायश्चित करने के लिए भण्डारा कर दे।

महात्माजी ने इस बात को सुनकर कहा- " यही वह नौजवान लड़की है, जो तुम्हें दिखाई देती है। तुमने जो कुछ खाया वह पुण्य भाव से दिया हुआ दान नहीं था। पाप की कमाई का एक भाग है- उस हतभाग्य लड़की का मूल्य। जब तक वह अन्न तुम्हारे शरीर से नहीं निकलेगा, तब तक उस दुःखी लड़की का दिखाई देना बन्द न होगा।

यह है पाप का अन्न खाने का परिणाम् इससे आत्मा गिरती है। आगे बढ़ता हुआ मनुष्य पीछे गिरता है।

लाभप्रद हैं फलों का सेवन

–डॉ. अनामिका प्रकाश

वैज्ञानिक अनुसंधान से ज्ञात हुआ है कि शाकाहारी भोजन के साथ फलों का आहार शरीर को चिरयौवन प्रदान करता है। मांसाहारी और तेज मिर्च मसालेयुक्त पदार्थ शरीर को रोगी बनाते हैं और त्वचा की लावण्यता को कम करते हैं। हरे पत्तों का सूप या फल आदि शरीर को निरोग बनाने में काफी सहायक होते हैं।

आमः यह फलों का बादशाह माना जाता है। इसकी अनेक जातियां होती हैं जिनमें हाफुश, लंगड़ा, सफेदा, दशहरी, चैसा, दरबारी और राजभोग प्रमुख हैं। यह गले के रोगों के लिए बहुत लाभदायक पाया गया है। अतिसार, मूत्र रोग, योनि रोग में लाभ प्रदान करता है और वीर्यवर्द्धक भी होता है। गर्मी में लू लगने पर कच्चे आम का पना बहुत लाभप्रद होता है। दूध के साथ आमरस शक्ति प्रदान करता है।

अमरूद : यह फल भारत में सभी प्रांतों में पाया जाता है, लेकिन इलाहाबाद के अमरूद का विशेष स्थान है। यह सात्विक मधुर फल है। हल्का खट्टा पकने पर स्वादिष्ट–शीतल, कफकारक, रक्तवर्द्धक, त्रिदोषनाशक, दाह, मूर्च्छा में सहायक, कब्ज के रोगियों में बहुत उपयोगी है। कुछ देशों में इसके पत्तों को पानी में उबालकर लोग स्नान करते हैं और मधुमेह के रोगियों को पिलाते हैं। इसके पत्तों का काढ़ा हैजा, दंत पीड़ा और जले स्थान आदि पर लगाने से लाभ होता है।

केला : यह वृक्ष भारत ही नहीं, विदेशों में भी प्रसिद्ध है। इसकी अनेक जातियां होती है। हरी छाल, लाल, छाल, पीली छाल, कोकनी और चीनी छाल। यह पौष्टिक और कृमिनाशक होता है। यह मासिक धर्म की अनियमिताओं को दूर करता है, रक्त विकार, मधुमेह, अग्निमथ, कुष्ठ, कान की पीड़ा, गुर्दे की निर्बलता में सहयोगी, सर्प दंश के रोगी को इसके पेड़ से निकले जल का एक प्याला देने से लाभ होता है और कच्चा खाने से पेशाब की अधिकता में कमी आती है।

अनार : देश विदेशों में सभी वर्ग के लोग इसके रस का आनन्द लेते हैं। अनार त्रिदोष नाशक, ज्वर दूर करने वाला, हृदय रोग में लाभप्रद, मुखरोग दूर करने वाला और बलवर्द्धक होता है। इसके फूल के रस को नाक से खून बहने की अवस्था में डालने पर लाभ होता है। छिलके को काढ़ा कृमिनाशक और खांसी में लाभप्रद होता है।

सेब : इसका वृक्ष मध्यम श्रेणी की ऊँचाई लिए हुए होता है। भारत में कश्मीर, हिमाचल प्रदेश में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह बात–पित्तनाशक, पौष्ठिक, शीतल, वीर्यवर्द्धक होता है। इसमें विटामिन बी काफी मात्रा में होता है। नेत्रों के अनेक रोगों में इसका सेवन लाभप्रद होता है। कब्ज के रोगी को रात को सेब खाकर दूध पीना चाहिए। इससे प्रातः पेट अच्छी तरह साफ होता है। सेब गुर्दे की पीड़ा में लाभप्रद होता है। और इसके रस के सेवन से नींद अच्छी आती है।

जामुन : भारत के सभी प्रांतों में इसके पेड़ पाए जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु के अंत में इसके सेवन से रक्त विकार संबंधी रोगों में राहत मिलती है। मधुमेह में यह विशेष लाभप्रद होता है। मुधमेह के रोगी को रोजाना तीन रत्ती जामुन का चूर्ण दिया जाना लाभप्रद होता है। यह खांसी में लाभप्रद, मसूड़ों को मजबूत करता है।

आड़ू : वास्तव में यह फल चीन का है। यूरोप में भी यह काफी पाया जाता है। भारत में हिमाचल, मणिपुर और उत्तरी भागों में काफी पैदा होता है। यह पौष्टिक, मधुर, हृदय रोगों में लाभप्रद, प्रमेह, बवासीर के रोगी के लिए उपयोगी होता है। इसके पत्ते कृमिनाशक होते हैं।

अंगूर : यह फल कश्मीर, कर्नाटक आदि स्थानों में काफी होता है। यह वीर्यवर्द्धक होता है। काले अंगूर और हरे अंगूर का शर्बत शरीर के लिए पुष्टिकारक होता है। ज्वर, हल्की हरारत एवं पेट के रोगों में तो यह बहुत हितकारी होता है। नेत्रों के लिए अंगूर का सेवन बहुत फायदेमन्द होता है।

संतरा, मौसमी, मालटा एवं कीनूः ये फल भारत के लगभग सभी भागों में प्राप्त होते हैं। नागपुर का संतरा, मुम्बई की मौसमी प्रसिद्ध है। इनके फलों का रस पेट के रोग, गले के रोग, श्वास के रोग, दस्त में लाभदायक होता है। बलवर्द्धक, ज्वरनाशक, प्यास बुझाने वाले, रक्त पित्त नाशक। विटामिन सी और ए होने से नेत्र रोग में उपयोगी होता है। इसके रस में हींग मिलाकर देने से कृमिनाश होता है।

अलूचा : गढ़वाल, कश्मीर, पश्चिम हिमाचल के श्रेत्रों में अधिक होता है। यह प्यास को हरने वाला, खांसी में लाभप्रद होता है। गले के रोगों में उपयोगी और इसके पत्ते कृमिनाशक होते हैं।

चीकू : यह पित्तनाशक, ज्वरनाशक एवं लौहपूर्ण होता है।

पपीता : यह पौष्टिक, रूचिकर, शीतल होता है। मधुमेह के रोगियों के लिए लाभकारी होता है। कच्चे पपीते की सब्जी पेट के रोगों में हितकारी होती है। इसके बीज तो अनेक औषधियों में उपयोगी होते हैं।

खरबूजा : यह अमृत के समान गुणकारी होता है। वीर्यवर्द्धक, उन्माद का नाश करता है। शीतल, पसीना लाने वाला होता है। स्त्रियों में दूध बढ़ाता है। गुर्दे के रोग में लाभकारी, पीलिया में फायदेमन्द, पथरी को तोड़ता है। पेट की गर्मी को कम करता है। मुख पर लेप करने से झाइयां मिटती है। इसके बीज पेट साफ करते हैं, वीर्यवर्द्धक, नेत्रों के लिए शक्तिदायक, पेशाब की जलन और जिगर की सूजन भी मिटाते हैं।

तरबूज : यह पीलिया में लाभप्रद, वात कफ नाशक होता है। इसके बीज मधुर और नेत्रों के लिए उपयोगी, बलकारक, धातुवर्द्धक होते हैं, खून की उल्टी में भी इसके बीजों से लाभ होता है।

सिंघाड़ा : यह वीर्यर्द्धक, दाह दूर करने वाला होता है, इसके सेवन से प्यास कम लगती है। यह कामोद्दीपक, त्रिदोषनाशक, श्रम हारक, सूजन और संताप दूर करने वाला होता है। सिंघाड़ा ज्वनाशक, मलेरिया में सहायक एवं रक्त प्रदर में भी उपयोगी होता है।

नारियल : यह वीर्य वर्द्धक, स्निग्ध, भारी कब्ज दूर करने वाला, बल कारक, ज्वर में लाभप्रद, प्यास बुझाता है। रूधिर दोष और क्षय रोगी के लिए भी लाभप्रद होता है। सूखा नारियल भी वीर्यवर्द्धक होता है। इसका तेल केशों के लिए उपयोगी होता है और जले स्थानों पर लगाने से लाभ मिलता है।

साभार – यज्ञ–योग ज्योति

तलवार का रंग काला क्यों हो गया।

देश का भविष्य क्यों अंधकार मय हो गया।
वर्तमान देश को पश्चिम को विक्रम हो गया।

पृथ्वीराज की तलवारों का रंग काला हो गया।
देश नहीं देश तो धर्मशाला हो गया।
जिसके लिए वीरों ने सहज दिया बलिदान था।
परवानों की तरह मिटा एक से एक जवान था।

इनामी बदमाश यहाँ संसद बीच चिल्लाते हैं।
होनी थी जिनको फाँसी वो कुर्सी पा जाते हैं।
बन्दूकों का राज यहाँ पैसों का कानून है।
बोतलों में भरकर बिकता गरीबों का खून है।

कुछ देवी इज्जत हेतु मौत को गले लगाती हैं।
पर कुछ देवी कन्याओं से यहां वैश्यालय चलवाती है।
जिस देश के राजतन्त्र पर नपुंसक शासन करते हैं।
जिसके नौजवान वतन पर नहीं फैसन पर मरते हैं।

जहां बलवान के द्वारा दलित कमज़ोर सताया जाता है।
जहां गाय को भी माँ मानकर माँ को ही कटवाया जाता है।
उस देश के बलिदानियों का बालिदान बच कैसे सकता है।
अन्धे वतन को सही राह पर संविधान चला कैसे सकता है।

जिस तरह बारूद पर बैठा आज हिन्दूस्तान है।
प्रलय ही एक मात्र इसका समाधान है।
है रक्षक, परमात्मा बचाना अपने हिन्दुस्तान को।
फिजा के दौर में बहार देना इस गुलिस्तान को।
तलवार का रंग इसीलिए काला हो गया है।

– रौनक कुमार शास्त्री

आध्यात्मिक उद्‌गार शायरी

जिन्दगी ऐसी बना, जिन्दा रहे दिल शाद तू।
तू न हो दुनिया में तो, दुनिया को आये याद तू।।

दिल के फफोले जल, उठे सीने के दाग से।
इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से।।

एक टीस दिल में उठती है, एक दर्द जिगर में होता है।
हम बैठ के रात में रोते हैं, जब सारा आलम सोता है।।

हम आह भी करते हैं, तो हो जाते हैं बदनाम।
वे कत्ल भी करते हैं, तो चर्चा नहीं होती।।

देख कर मत रीझना तू, बाहर की सफाई पर।
वर्क सोने से मढ़ा है, गोबर की मिठाई पर ।।

वह कौन सा उकदा है, जो हो नहीं सकता।
हिम्मत करे इन्सान तो, क्या हो नहीं सकता।।

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जब राह में शूल न हो।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हो।।

तेरी सूरत से नहीं मिलती, किसी और की सूरत।
हम जहाँ में तेरी, तस्वीर लिये फिरते हैं।।

इक खुदा का दर, ही ऐसा है जहाँ।
सर झुका रहता, है मगरूर का।।

खुदाया खुदाई में, क्या हो रहा है।
कि भाई से भाई, जुदा हो रहा है।।

जिस तरह अग्नि का शोला, हर रंग में मौजूद है।
इस तरह परमात्मा हर, रंग में मौजूद है।।

प्रश्न- जाहिद शराब पीने दे, मस्जिद में बैठ कर।
या वह जगह बता कि जहाँ पर खुदा न हो।।

उत्तर- ऐ रिन्द पी शराब, जी चाहे बेधड़क।
दिल में खुदा नहीं तो, कहीं भी खुदा नहीं।।

गिलासों में डूबे फिर न, उभरे जिन्दगानी में।
हज़ारों बह गये इन, बोतलों के बन्द पानी में।।

नशा पिला के गिराना, सब को आता है।
मजा तो तब है कि, गिरतों को थाम लो साकी।।
माड़ा नशा शराब दा, उतर जाये प्रभात।
नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।।

जिन्दगी भर हम, मरे जिन के लिये।
वे न हो सके, दो दिन के लिये।।

खौफ आता है, जिन को मरने से।
उन का जीना, हराम होता है।।

आगाह अपनी मौत से, कोई बशर नहीं।
सामान सौ वर्ष का, पल की खबर नहीं।।

जिन्दगी की राहों में, गम भी साथ चलते हैं।
कोई गम में हँसता है, कोई गम में रोता है।।

हजारों वर्ष नर्गिस, अपनी बेनूरी पर रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता, चमन में दीदावर पैदा।।

यदि सच पूछो तो, दुनिया में रोना ही रोना है।
जिसे हम जिन्दगी कहते हैं, वह काँटों का बिछौना है।।

ये दुनिया है बड़े काम की, हमें जीना नहीं आता।
दुनिया की हर चीज में नशा है, हमें पीना नहीं आता।।

न हैरान हो देख, मैं क्या देख रहा हूँ।
बन्दे तेरी सूरत में, खुदा देख रहा हूँ।।

न दोस्तों से शिकायत, न दुश्मनों से गिला।
किसी ने मुझ को भुलाया, किसी ने याद किया।।

दोस्त से दुश्मन अच्छे, जो जलकर नाम लेते हैं।
फूलों से काँटे अच्छे, जो दामन थाम लेते हैं।।

एक ही उल्लू काफी है, बरबाद गुलिस्ताँ करने को।
हर शाख पर उल्लू बैठा है, अन्जामें गुलिस्ताँ क्या होगा।।

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलिस्ताँ हमारा।।

फरिश्ते से बेहतर, है इन्सान बनना।
मगर इस में लगती, है मेहनत ज्यादा।।

राजी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रजा है।
या यूँ भी वाह वा है, वहाँ यूँ भी वाह वा है।।

इबादत के लिए काफी, नहीं तस्बीं घुमा देना।
किसी बरबाद को आबाद, कर देना इबादत है।।

किसी मस्जिद या मन्दिर में, जा सर को झुका देना।
इबादत है किसी बेआसरे, को आसरा देना।।

इबादत है किसी मगरूर, का कर्ज़ा चुका देना।
किसी माजलूम को जालिम से, छुड़ा देना इबादत है।।

किसी नादान की मुश्किल में, काम आना इबादत है।
इबादत है यह जीवन, कौम की खातिर लगा देना।।

इबादत है वतन के वास्ते, सर को कटा देना।
इबादत है किसी भूखे को, भोजन खिला देना।।

इबादत है किसी नंगे को भी, कपड़ा पिन्हा देना।
किसी नाशाद का दिल, शाद कर देना इबादत है।।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

जिसको न निज गौरव तथा, निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं पशु है निरा, और मृतक समान है।।

मरते-मतरे मर गये, लेकिन न छोड़ा आन को।
याद रक्खो दोस्तो, हिन्दुस्तानी शान को।।

योगेश्वर श्री कृष्ण

कृष्ण तो नाम है आकाश की ऊंचाई का
कृष्ण इक नाम है मुंह बोलती सच्चाई का।
कृष्ण को दुष्ट कहा करते जो खुद दुष्ट हैं वो।
कृष्ण को भ्रष्ट कहा करते जो खुद भ्रष्ट हैं वो।
सच तो ये है कि हिन्द देश की तकदीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।
कौन कहता है भ्रष्ट रास रचाया करता?
कौन कहता है कि कपड़े वो उठाया करता?
कौन कहता है कि राधा को नचाया करता?
कौन कहता है कि माखन वो चुराया करता?
न्याय था नग्न हुआ उसके लिए चीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।
सच कहो सत्य को आसन पे बिठाया किसने?
और अन्याय को मिट्टी में मिलाया किसने?
सच्चे हकदार को फिर हक था दिलाया किसने?
ज्ञान गीता का दुःखी जग को सुनाया किसने?
सत्य कहते हैं सभी जीत की तदबीर था वो?
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।
कौन था कर्म का सिद्धान्त बताने वाला?
कौन था गर्व को झट धूल चटाने वाला?
कौन था कंस के आसन को हिलाने वाला?
कौन था मुर्दा पड़ा धर्म जिलाने वाला?
जिसका सानी न कहीं एक अजब वीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं न्याय की शमशीर था वो।
बांसुरी प्रेम की दुनिया को सुनाई किसने?
पाप के ढेर में थी आग लगाई किसने?
खण्डर न्याय की फिर दुनिया बसाई किसने?
द्रौपदी लुटने लगी लाज बचाई किसने?
देवता योगी यती धर्म की तस्वीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं न्याय की शमशीर था वो।
कृष्ण का जन्म था जंजीर तोड़ने के लिए।
कृष्ण का कर्म था हृदयों को जोड़ने के लिए
कृष्ण के नीति नयन बन्द नहीं होते थे।
कृष्ण मानस में सदा पुण्य बीज बोते थे।
चल के खाली न गया ऐसा गज़ब तीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।

मृत्यु भय

सभी प्राणियों (मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट,पतंग) की दो मुख्य कामनायें होती हैं: मैं सदा जीवित रहूँ और सदा सुखी रहूँ। कोई भी काल का ग्रास नहीं बनना चाहता परन्तु ये दोनों बातें असम्भव हैं। जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है और हर प्राणी को अपने अपने कर्मो के अनुसार सुख और दुःख भोगना पड़ता है शरीर के प्रति यह मोह अद्‌भुत है। शरीर धारियों की मृत्यु तो परमावश्यक है।

मृत्यु निश्चित है परन्तु उसका समय अनिश्चित है। शरीर धारण करने के साथ ही इस शरीर के खोने का भय भी उत्पन्न हो जाता है। मृत्यु भय का कारण भौतिक शरीर से तादात्म्य और आसक्ति है। यह तादात्म्य अवचेतन मन में राग-द्वेष के क्रियाशील होने के कारण होता है। इस राग-द्वेष का कारण अंहकार है। अहंकार की उत्पत्ति अविद्या से होती है। इस लिये मृत्यु भय से मुक्त होने के लिये अज्ञान और उसके प्रभावों को नष्ट करना होगा।

जो व्यक्ति मनादि में अंहता-ममता की भावनाओं का परित्याग करके ऐन्द्रिय जीवन से ऊपर उठ जाते हैं वे मृत्यु भय से मुक्त हो जाते हैं। सभी प्राणियों में मनुष्य ही भयमुक्त हो सकता है क्योंकि वह विवेक अर्जित कर सकता है। विवेक से अज्ञान दूर होता है।

अपनी अमरता में देह का मोह बाधक है। परम सुख का निरोधक मन का मोह है। देह के मरण को अपना मरण मानता है। जब व्यक्ति की श्रवण मनन और निदिध्यासन से यह निष्ठा परिपक्व हो जाती है कि वह स्थूल देह नहीं, वह सूक्ष्म शरीर नहीं, वह कारण शरीर नहीं, वह तो केवल शुद्ध चेतन आत्मा है तब उसकी मृत्यु नहीं होती। फिर मृत्यु भय का प्रश्न ही नहीं रहता।

–जे. आर. कपूर

ममतामयी-मानवता की प्रतिमूर्ति - श्रीमती चन्द्रकला राजपाल

श्रीमती चन्द्रकला राजपाल वैदिक संस्कारों की महिला है। आर्यसमाज एवं मानवता के प्रति हर पुनीत कार्य में आपका आर्थिक योगदान सुनिश्चित रहता है।

आपके दादा भगत श्री कबीरदास मुल्तान के प्रसिद्ध व्यापारी थे। पति श्री वेदराज वेदालंकार सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान थे। भास्कर कॉलेज के संस्थापक श्री विजय भास्कर आपके सुपुत्र है।

श्रीमती चन्द्रकला राजपाल 18 वर्ष तक आर्य समाज, टेगौर गॉर्डन तथा 10 वर्ष तक आर्य समाज, सुन्दर विहार की प्रधाना रही है। श्रीमती राजपाल "महिला वेद प्रचार मंडल-दिल्ली की 5 वर्ष तक प्रधाना, 10 वर्षों तक मंत्राणी रही है"। ईश्वर आपको शतायु करे।

–चन्द्रभान चौधरी
संरक्षक – भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

संस्कारों के नाम एवं संख्या–एक दृष्टि में

भारतीय गृह्यसूत्रों और संस्कार विषयक ग्रन्थों में भिन्न–भिन्न प्रकार से संस्कारों के नाम व उसकी संख्या दी गयी है, इनमें सबसे कम अश्वलायनगृह्यसूत्र में 10 व सबसे अधिक गौतमधर्मसूत्र में 48 हैं। जिसका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत है–

आश्वलायनगृह्यसूत्र –

1. विवाह, 2. गर्भाधान, पुंसवन, 4. सीमन्तोनयन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. चूड़ाकरण, 8. उपनयन, 9. समावर्तन और 10. अन्त्येष्टि।

बौधायनगृह्यसूत्र –

1. विवाह, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. सीमनतोन्नयन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. उपनिष्क्रम, 8. अन्नप्राशन, 9. चूड़ाकरण, 10. कर्णवेध, 11. उपनयन, 12. समावर्तन और 13. पितृमेध।

पारस्करगृह्यसूत्र –

1. विवाह, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. सीमन्तोन्नयन, 5. जातकर्म, नामकरण, 7. निष्क्रमण, 8. अन्नप्राशन, 9. चूड़ाकरण, 10. उपनयन, 11. केशान्त, 12. समावर्तन और 13. अन्त्येष्टि।

वाराहगृह्यसूत्र –

1. जातकर्म, 2. नामकरण, 3. दन्तोद्गमन, 4. अन्नप्राशन, 5. चूड़ाकरण, 6. उपनयन, 7. वेदव्रत, 8. गोदान, 9. समावर्तन, 10. विवाह, 11. गर्भाधान, 12. पुंसवन और 13. सीमन्तोन्नयन।

वैखानसगृह्यसूत्र –

1. ऋतुसंगमन, 2. गर्भाधान, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. विष्णुबलि, 5. जातकर्म, 6. उत्थान, 7. नामकरण, 8. अन्नप्राशन, 9. प्रवासागमन, 10. पिण्डवर्धन, 11. चौलक, 12. उपनयन, 13. पारायण, 14. व्रतबन्धविसर्ग, 15. उपाकर्म, 16. उत्सर्जन, 17. समावर्तन और 18. पाणिग्रहण।

गौतमधर्मसूत्र –

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण 6. अन्नप्राशन, 7. चौल, 8. उपनयन, 9–12.9. ऋग्वेद, 10. यजुर्वेद, 11. सामवेद, 12. अथर्ववेद), 13. स्नान, 14. सह–धर्मिणीसंयोग, 15–19. पञ्च महायज्ञ (15. देव, 16. पितृ, 17. मनुष्य, 18. भूत, 19. ब्रह्म), 20–26. सप्त पाकयज्ञसंस्था (20. अष्टका, 21. पार्वण, 22. श्राद्ध, 23. श्रावणी, 24. आग्रहायणी, 25. चैत्री, 26. आश्वयुजी), 27–33. सप्त हविर्यज्ञसंस्था (27. अग्याधेय, 28. अग्निहोत्र, 29. दर्शपौर्णमास, 30. चातुर्मास्य, 31. आग्रहायणेष्टि, 32. निरूढपशुबन्ध 33. सौत्रामणी), 34–40. सप्त सोमयज्ञसंस्था (34. अग्निष्टोम, 35. अत्यग्निष्टोम, 36. उक्थ्य, 37. षोडशी, 38. वाजपेय, 39. अतिरात्र, 40. आप्तोर्याम), 41–48. आठ आत्मगुण (41. दया, 42. शान्ति, 43. अनूसया, 44. शौच, 45. अनायास, 46. मंगल, 47. अकार्पण्य, 48. अस्पृहा)।

महर्षि अंगिरा द्वारा प्रतिपादित संस्कार –

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. विष्णुबलि, 6. नामकरण, 7. निष्क्रमण, 8. अन्नप्राशन, 9. चौल, 10. उपनयन, 11–14. चार वेदव्रत (11. ऋग्वेद, 12. यजुर्वेद, 13. सामवेद, 14. अथर्ववेद), 15. समावर्तन, 16. विवाह, 17. पञ्च महायज्ञ, 18. आग्रयण, 19. अष्टका, 20. श्रावणी, 21. आश्वयुजी, 22. मार्गशीर्षी, 23. पार्वण, 24. उत्सर्ग तथा 25. उपाकर्म।

महर्षि व्याससनिर्दिष्ट षोडश संस्कार –

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रम, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकरण, 9. कर्णवेध, 10. उपनयन, 11. वेदारम्भ, 12. केशान्त, 13. समावर्तन, 14. विवाह, 15. विवाहाग्निपरिग्रह और 16. त्रैताग्निसंग्रह।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट षोडश संस्कार –

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8.चूड़ाकरण, 9.कर्णवेध, 10. उपनयन, 11. वेदारम्भ, 12. समावर्तन, 13. विवाह, 14. वानप्रस्थ, स15. संन्यास और 16. अन्त्येष्टि।

रक्षाबन्धन

रक्षाबन्धन भारतीय वैदिक संस्कृति को जीवित रखने वाला पर्व है। पर्व का अर्थ **"पृणाति–पूरयति इतिपर्व"** जो पूर्ण कर दे, तृप्त कर दे, उत्साहित कर दे वह पर्व है। भारतीय परम्परा में अनेक पर्व है– उन्हीं पर्वों में से श्रावणी का विशेष महत्व है। श्रावणी पर्व श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को धूमधाम से मनाया जाता है। श्रावणी पर्व अनेक नामों से जाना जाता है, जैसे श्रावणी, उपाकर्म, रक्षाबन्धन आदि। रक्षाबन्धन का अभिप्राय है– आत्मरक्षा के लिए बन्धन। बहन अपने भाई के हाथों में रक्षा सूत्र बांधती है और अपने भाई के सुखी दीर्घायु की कामना करती है। भाई भी अपनी बहन की रक्षा का प्रण लेता है। ऐसे ही अवसर पर भाई के उद्गार मुखरित हो उठते हैं –

रक्षा– रक्षा कायरता से, मर मिटने को दे वरदान।
हृदय–रक्त से टीका कर दे, मेरे मस्तक लाल निशान।
वह जीवन का स्रोत आजकर, मेरे मानस का संचार।
कांप न जाऊं देख समर में, रिपु की बिजली सी तलवार।

कितनी ही खेद जनक बात हैं कि आज रक्षाबन्धन के पुनीत त्यौहार ने अपनी मूलभूत महत्ता को खो दिया है। राखी के प्रेम पूर्ण सूत्र चांदी की हाट पर बिक गये हैं। वास्तविकता का स्थान कृत्रिमता ने ले लिया है। बहनों में लोभ लालच की भावना आ गई है यदि भाई का सम्पन्न है तो उसकी कलाई में मूल्यवान राखी बांधी जाती है और निर्धन भाई की कलाई को शिष्टाचार की वेदीपर चढ़ा दिया जाता हैं। यही कारण है कि आज भाई–बहन में उतना प्यार नहीं रहा जितना होना चाहिए। कई भाई तो ऐसे भी हैं। जो वर्ष भर अपनी बहनों को नहीं पूछते केवल इस दिन अपनी बहन से राखी बंधवाकर परम्परा का निर्वाह कर लेते हैं। राखी कलाई की शोभा नहीं और न ही रेशम की कोमल कड़ी ही हैं। यह तो लोहे की हथकड़ी है जिसे भाई सहर्ष पहनता है। राखी के धागों में बहन का प्यार होता है बहन की रक्षा भार होता है। बहन अपनी हो या मुंहबोली रक्षासूत्र में बंधा भाई कट जाता है, बहन पर आंच नहीं आने देता। विपत्ति आने पर कभी कर्णवती ने हुमायूं को राखी बांधी थी। सिकन्दर की प्रेयसी ने पोरस को रक्षाबन्धन में बांधा था। राजपूतो ने अपनी बहनों की रक्षा हेतु राखी की चुनौती को स्वीकार किया था। आज भी भाई की कलाई पर बंधी राखी चुनौती दे रही हैं।

श्रावणी पर्व

श्रावणी उपाकर्म श्रावणी मास से ही श्रावण पर्व बना है जिसका अर्थ है सुनना सुनाना जिस पर्व में होता है वह श्रावणी है। इस पर्व पर समस्त आर्य समाज में वेद प्रचार समारोह का आयोजन करते हैं और श्री कृष्णजन्माष्टमी तक वेद कथाओं, सत्संगों का कार्यक्रम होता है। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखा हैं– वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना और सुनना–सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

आओ वेद प्रचार करें सब,
रोगों का उपचार करें सब।
सबसे सुन्दर देश हमारा,
इसको प्रभु ने स्वयं संवारा।
सबको सबका मिला सहारा,
वही पुनः आचार करें सब।
आओ वेद प्रचार करें सब,
रोगों का उपचार करें सब।

ब्राह्मणों के लिए यह पर्व विशेष महत्व रखता है क्योंकि ब्राह्मण ही क्षत्रिय आदि वर्णों (मनुष्यों) का मार्गदर्शक होता है। अतः उसे ज्ञानी होना आवश्यक है वेदादि शास्त्रों के पढ़ने से स्वाध्याय करने से वह ज्ञानी होता है। वेद स्वाध्याय उसका अभिन्न अंग है इसलिए संन्यासी, ब्राह्मण के लिए कहा जाता है– **संन्यसेत् सर्व कर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत्।** भले ही अन्य सब कर्म छोड़ दे परन्तु एकमात्र वेदों का पठन–पाठन रूपी कर्म न छोडे।

प्राचीन काल में इस दिन गुरुकुलों में यज्ञोपवीत धारण करने की परम्परा थी। आज भी इस श्रावणी पर्व के अवसर पर हर्षोल्लास के साथ यज्ञपूर्वक नये प्रविष्ट ब्राह्मचारियों का उपनयन–यज्ञोपवीत संस्कार तथा वेदारम्भ संस्कार किया जाता है। इस प्रकार यह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, श्रावणी उपाकर्म, श्रावणी पर्व हर वर्ष हमें शिक्षा देता है।

श्रावणी पर्व अब आया,
इसमें रहें उत्साह सवाया।
श्रावणी प्रथा अति प्यारी,
अपनायें इसको नर नारी।
ऋषि ने यह उद्घोष किया था,
कहा कार्य यह मंगलकारी।
बडे भाग्य से अवसर पाया,
ऋषि ने आर्य समाज बनाया।
वेद पढो यह मन्त्र सुनाया,
कोई इससे रहे न वंचित।
सबको यह उद्देश्य जनाया,
सब आर्यों के यह मन भाया।

मौरिशस यात्रा एवं मधुमेह रोग निवारण शिविर का भव्य आयोजन

आर्यजगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान एवं अध्यात्मपथ के प्रधान संपादक आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी के पावन सानिध्य एवं आर्य ट्रेवल के सौजन्य से दिनांक 1.10.2015 से 7.10.2015 तक मौरिशस यात्रा एवं मधुमेह रोग निवारण शिविर का भव्य आयोजन मौरिशस में होने जा रहा है।

मौरिशस के विश्वप्रसिद्ध समुद्र किनारे सफेद रेत व वहाँ के मनोहारी दृश्य की यात्रा का सुनहरा अवसर है। यात्री किराया प्रति व्यक्ति 66000/– है। इस यात्रा में 3 स्टार होटल में रहने की व्यवस्था, आने–जाने का टिकिट, वीजा, एयरपोर्ट टैक्स, भ्रमण, प्रातः नाश्ते की व रात्रि भोजन व्यय सम्मिलित है।

इस यात्रा में जाने के इच्छुक व्यक्ति शीघ्र ही अपना नाम तथा अग्रिम राशि के रूप में 45000/– रूपया अवश्य जमा करायें। यात्रियों के पासपोर्ट की अवधि 2016 तक वैध होनी चाहिए। यात्री अपना चैक या ड्रफ्ट आर्य ट्रेवल अथवा विजय सचदेव के नाम से भेज सकते हैं।

सम्पूर्ण जानकारी के लिए हमारे आचार्य जी का संपर्क सूत्र– आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आर्य समाज बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी, नई दिल्ली–18 मो. 9810084806 ।

कार्यक्रम के संयोजक हैं – श्री विजय सचदेव 2613/9, चुनामण्डी, पहाड़गंज नई दिल्ली –55, मो. 9811171166 ।

सैरकर दुनियाँ की नादान जिन्दगानी फिर कहाँ।
जिन्दगानी भी रही तो नौजवानी फिर कहाँ।

दान

अब्दुल रहीम खानखाना प्रसिद्ध कवि थे, पर साथ ही एक नेकदिल इन्सान भी थे। जकात (दान) में उनका बहुत भरोसा था। वे प्रतिदिन गरीबों और याचकों को घर के बाहर दान दिया करते थे, पर उनका नियम था कि दान देते समय अपनी नजरें झुका लिया करते थे और झुकी हुई नजरों से ही दान दिया करते थे। एक बार प्रसिद्ध कवि गंग उनसे मिलने आए तो उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति कई बार रहीम साहब से दान ले चुका है, वह उनकी नजरें झुकी होने का फायदा उठाकर बार–बार कतार में लग जाता है और दान लेने लग जाता है।

यह देखकर कवि गंग खानखाना जी से कविता में बोले –

सीखी कहाँ से नवाबजूं
ऐसी देनी देन?
ज्यों–ज्यों कर ऊँचें चढ़ें
त्यों–त्यों नीचे नैन?

नवाब साहब! दान देने का ऐसा तरीका भला आपने कहाँ से सीखा?जैसे–जैसे आपका हाथ देने के लिए ऊपर चढ़ रहा है, वैसे–वैसे आपकी आँखें भी नीचे को झुकती जा रही हैं।

कवि गंग के प्रश्न का उत्तर भी खानखाना जी ने कविता में ही दिया –

देनहार कोई और है,
जो देता दिन–रैन ।
लोग भरम मो पे करें,
ताते नीचे नैन ।।

असल में देने वाला तो कोई और है जो रात–दिन सबको कुछ–न–कुछ देता है, पर लोग व्यर्थ ही हमें दाता समझ बैठते हैं। इसलिए नजरें झुकाकर दान दे रहा हूँ। दान देने का सच्चा अर्थ अहंकारशून्यता और प्रभु के प्रति समर्पण से ही निकलता है।

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का द्विवार्षिक निर्वाचन

प्रधान	–	श्री रविदेव गुप्ता
वरिष्ठ उप–प्रधान	–	श्री हरबंसलाल कोहली
महा–मंत्री	–	श्री चतर सिंह नागर
कोषाध्यक्ष	–	श्री ओमवीर सिंह

अगस्त –2015 के आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज, करोल बाग, नई दिल्ली	छः माह की सहायता	3000/–
श्रीमती कमलेश पाल जी, पति श्रीपाल प्रवीण जी, सै.–डी, अलीगंज, लखनऊ		1200/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै. 15, फरीदाबाद हरियाणा		1000/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली		1000/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री, शुद्धि सभा		500/–
श्री सरवेन्द्र सिंह लोधी, बी.ए.आर.सी. कालोनी, पालघर, महाराष्ट्र		200/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

कु. गरिमा जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्री चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्री यशपाल आर्य जी, आर्य हैण्डलूम कृष्णा पार्क, तिलकनगर, नई दिल्ली		500/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, विकास पुरी, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
डॉ. पुष्पलता वर्मा जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–

श्रीमती संतोष वधवा जी द्वारा एकत्रित दान

श्री राकेश वधवा जी एवं वधवा परिवार, नारायणा विहार, नई दिल्ली (पुण्य स्मृति स्व. श्रीमती विमला वधवा जी)	1000/–
श्रीमती स्वराज थापर जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती संतोष वधवा जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/–

धन्यवाद

श्रीमती संतोष वधवा जी प्रधाना–आर्या स्त्री समाज नारायणा विहार (नई दिल्ली) एक सच्ची ऋषि भक्त, आर्य समाज के लिए समर्पित विदुषी महिला हैं। शुद्धि सभा के लिए भी वह निरन्तर सहयोग प्रदान कर रही हैं इसके लिए वह दान एकत्रित करती हैं और शुद्धि समाचार के अब तक 50 से ऊपर आजीवन सदस्य बना चुकी हैं। यज्ञ एवं सत्संग का कार्य भी पिछले कई वर्षों से करवा रही हैं। श्रीमती संतोष वधवा जी के आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए हम इनका आभार प्रकट करते हैं और इनके अच्छे स्वास्थय लाभ की शुभकामना करते हैं।

–नरेन्द्र मोहन वलेचा (महामंत्री)

श्रद्धांजलि

श्रीमती विमला वधवा जी पूर्व प्रधाना, स्त्री समाज नारायणा विहार नई दिल्ली , प्रधाना प्रान्तीय महिला समाज, का 83 वर्ष की आयु में दिनांक 28 जुलाई 2015 को स्वर्गवास हो गया। स्व. श्रीमती विमला जी आर्य समाज की विचारधारा से पूर्ण रूप से जुड़ी थी वह बड़ी ही कर्मठ कार्यकर्ता, मधुरभाषी एवं ममतामयी सहयोगी महिला थीं। इनकी श्रद्धांजलि सभा 31 जुलाई 2015 को आर्य समाज नारायणा विहार में रखी गयी। परिवार की ओर से शुद्धि सभा को रु. 1000/– का दान दिया गया। शुद्धि समाचार परिवार की ओर से पुण्य आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

प्रेरणा

आर्य समाज रामकृष्ण पुरम् सैक्टर – 9, नई दिल्ली में रविवार दिनांक 9 अगस्त 2015 को बच्चों की भाषण प्रतियोगता का आयोजन किया गया जिसका विषय था "वेदों का महत्व" इस प्रकार का विषय पहली बार आर्य समाज में बच्चो को दिया गया, प्रसन्नता की बात यह है कि बच्चों ने वेदों की जानकारी के लिए पूरा प्रयत्न किया।

–हरबंसलाल कोहली (प्रधान)

श्रावणी पर्व सोल्लास सम्पन्न

आर्य स्त्री समाज बहाबलपुर का श्रावणी पर्व दिनांक 17 अगस्त से 22 अगस्त तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री थे। आचार्य विकाश तिवारी जी के प्रवचन एवं श्रीमती अमृता आर्या जी के सुमधुर भजन हुए।

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-9-2015 Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

सितम्बर – 2015

'योगेश्वर श्रीकृष्ण का चरित्र, भागवतादि पुराण और महर्षि दयानन्द'

–मनमोहन कुमार आर्य

श्रीकृष्ण योगेश्वर थे, महात्मा थे, महावीर और धर्मात्मा थे। महाभारत में उनके इसी स्वरूप के दर्शन होते हैं। यद्यपि मध्यकाल में महाभारत में भारी प्रक्षेप हुए हैं परन्तु फिर भी उसमें श्रीकृष्ण जी पर ऐसे घिनौने आरोप नहीं लगाये जैसे भागवत व अन्य पुराणों में लगाये गये हैं। इससे हमारा सनातन वैदिक धर्म बदनाम हुआ और विधर्मियों ने इसका लाभ उठाया। धर्मान्तरण में भी कृष्णजी का यह पौराणिक स्वरूप विधर्मियों का सहायक रहा। स्थिति यह थी कि वेदों का पठन पाठन न होने से अज्ञान का सर्वत्र प्रभाव था। स्वार्थी अपने स्वार्थ की सिद्धि में तत्पर थे। उसी की देन यह पुराण ग्रन्थ हैं। सत्य व यथार्थ को विस्मृत कर देने और श्रीकृष्ण जी जैसे महापुरूषों का चरित्र हनन होने से देश व समाज दिन प्रतिदिन पतन की ओर अग्रसर था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महर्षि दयानन्द जी का आविर्भाव होने पर उन्होंने गुरू विरजानन्द जी से प्राप्त आर्ष दृष्टि से सभी ऐतिहासिक स्थापनाओं की जांच की। गुरू विरजानन्द जी ने उन्हें बताया था कि जिन ग्रन्थों में पूज्य महापुरूषों की निन्दा आदि हो, वह स्वार्थी व अज्ञानी लोगों के बनाये हुए ग्रन्थ होते हैं। पुराणादि ग्रन्थों के रचयिताओं को भाषा का तो ज्ञान था परन्तु वह सत्य ज्ञान व विद्या से कोसों दूर थे। वह हमारे ऋषि–मुनियों के ज्ञान व आचरण के सर्वथा विपरीत दुर्बल विचारों वाले मनुष्य थे। अतः महर्षि दयानन्द ने महाभारत का अध्ययन कर श्रीकृष्ण जी के सत्य चरित को जाना और उसके आधार पर पुराणों में वर्णित श्रीकृष्ण जी पर मिथ्या आरोपों का निराकरण करते हुए सत्य वचनों को प्रस्तुत किया। सत्यार्थप्रकाश के ग्याहरवें समुल्लास में उन्होंने श्रीकृष्ण जी के विषय में जो लिखा है वह प्रत्येक भारतीय के लिए पठनीय है। उसे प्रस्तुत कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि "देखो ! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत (ग्रन्थ) में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले (पुराण के रचनाकार ने) ने अनुचित मनमाने दोष (श्रीकृष्णजी पर) लगाये हैं। (उन पर) दूध, दही मक्खन आदि की चोरी लगाई और कुब्जा दासी से समागम, पर स्त्रियों से रासमंडल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाये हैं। इसको पढ़–पढ़ा, सुन–सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत (पुराण) न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृभा महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती?

शिवपुराण में बारह ज्योतिर्लिगं लिखे हैं, उसकी कथा सर्वथा असंभव है, नाम धरा है ज्योतिर्लिगं और जिनमें प्रकाश का लेश भी नहीं। रात्रि को बिना दीप किये (दीपक जलाये) लिंग भी अन्धेरे में नहीं दीखते। ये सब लीला पोप जी की है।

(प्रश्न) जब वेद पढ़ने का सामर्थ्य (लोगों में) नहीं रहा, तब स्मृति, जब स्मृति के पढ़ने की बुद्धि नहीं रही, तब शास्त्र, जब शास्त्र

पढ़ने का सामर्थ्य न रहा, तब पुराण बनाये, केवल स्त्री और शूद्रों के लिये, क्योंकि इनको वेद पढ़ने–सुनने का अधिकार नहीं है। (उत्तर) यह बात मिथ्या है, क्योंकि सामर्थ्य पढ़ने–पढ़ाने से होता है और वेद पढ़ने–सुनने का अधिकार सब को है। देखों, गार्गी आदि स्त्रियां और छान्दोग्य में जानश्रुति शूद्र ने भी वेद 'रेक्यमुनि' के पास पढ़ा था और यजुर्वेद के 26 वें अध्याय मन्त्र 2 में स्पष्ट लिखा है कि वेदों के पढ़ने और सुनने का अधिकार मनुष्य मात्र को है। पुनः जो ऐसे ऐसे मिथ्या ग्रन्थ (पुराणदि) बना, लोगों को सत्य ग्रन्थों (वेद, दर्शन व उपनिषद आदि) से विमुख रख जाल में फसा अपने प्रयोजन को साधते हैं, वे महापापी क्यों नहीं?"

सत्य का ग्रहण एवं असत्य का त्याग ही मनुष्यों का धर्म है। सत्य ही मनुष्यों की उन्नति का प्रमुख कारण है, असत्य नहीं। प्रत्येक मनुष्य को अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। यह वैदिक सिद्धान्त हैं। इस हित दृष्टि से यह विचार प्रस्तुत किये हैं। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का अध्ययन कर मनुष्य में सत्य व असत्य का निर्धारण करने की शक्ति अर्थात् विवेक उत्पन्न होता है। अतः सर्वहितकारी होने के कारण सबको अकारण ही सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिये। इसी में मनुष्य जाति का हित छिपा है। यह सत्य एवं प्रमाणिक है कि श्रीकृष्ण जी योगेश्वर, महात्मा, महाप्रज्ञ, एकपत्नीव्रतधारी, ब्रह्मचारी, सदाचारी, देशभक्त, ईश्वरभक्त, वेदभक्त, सज्जनों के मित्र, दुष्ट–शत्रुहन्ता, केवल एक सन्तान के पिता तथा सत्यनिष्ठ महापुरूष थे।

यद्यपि श्रीकृष्ण हमारे सनातनी बन्धुओं के आराध्य व उपास्य हैं तथापि उनके चरित्र की रक्षा व उनके ऊपर लगाये गये मिथ्या दोषों से उन्हें मुक्त कराने के कारण उनके वास्तविक उत्तराधिकारी यदि कोई हैं तो वह महर्षि दयानन्द व उनकी संस्था आर्य समाजें हैं।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001

कविता

–डॉ. नलिन

आसरा प्रभु का लिया
सब गँवा, सब पा लिया

उलझनों को देखकर
हँस पड़े, सुलझा लिया

स्वप्न सारा जग लगे
सत्य जब अपना लिया

था बहुत दुर्गम कभी
लक्ष्य वह भी जा लिया

यह बुझा अंगार मन
सौंपकर दहका लिया

छोड़ सारी खिन्नता
नित्य उत्सव–सा लिया

डूबता जाता नलिन
तैरना बिसरा दिया

(–4.ई.6 तलमंडी, कोटा, राजस्थान)

"करके दिखाओ कुछ"

–देवेन्द्र कुमार मिश्रा

जीने की बुनियादी
जरुरतों से जूझ रहा हूँ
तुम कहते हो
कुछ बनके दिखाओ
कुछ करके बताओ
बन्दर नही हूँ जनाब
आदमी हूँ
रोटी–कपड़ा और मकान
जुटाना आजकल
किसी करतब से कम नहीं।
हरामखोर होता तो
मदारी बनता
बन्दर क्यों बनता?
ईमानदारी से
जीवन की आवश्यकताओं
की पूर्ति करना
कुछ करके दिखाना ही है।
स्वस्थ जीना और स्वस्थ मरना
इससे बड़ा चमत्कार
दूसरा नहीं
हवाओं में फैली गंदगी से
फेफड़ो के साथ
दिलोदिमाग भी संक्रमित
हो रहा है
ऐसे में सबकुछ देखना, सुनना,
सहना और ठीक–ठीक जीना
बहुत कुछ करके दिखाने
जैसा है।

– पाटनी कालोनी,
भरत नगर, चन्दनगांव
छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23847244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री